आधी आबादी

हर सन्डे, वूमेन्स डे

संस्करण – रविवार, 21 मई 2023, अंक – 02

बूढ़ी काकी के गुल्लक से निकला 2000 का नोट!

■ हीरेंद्र झा

शुक्रवार को उस समय देश में हलचल मच गई जब पता चला कि दो हजार के नोट अब बंद हो रहे हैं। लोगों ने नोटबंदी का दंश झेला हुआ है इसलिए इस ख़बर के बाद से हलचल वाज़िब ही थी। सोशल मीडिया पर भी यह ख़बर वायरल होती रही और यह ख़बर मेरे गाँव में भी पहुंची। मैं इस वक्त बिहार के बांका जिले के अपने गाँव राजपुर में हूँ। यहाँ भी देश के ज्यादातर नागरिकों की तरह उन लोगों की तादाद ज्यादा है जिन्होंने बरसों से दो हजार का नोट देखा तक नहीं। ऐसे में जब बूढ़ी काकी के गुल्लक से दो हज़ार का नोट निकला तो सबको हैरानी हुई। बूढ़ी काकी जिनका नाम तक उन्हें याद नहीं उन्होंने बताया कि पिछले साल उनका पोता उन्हें यह नोट दे गया था, उसने ये पैसा संभाल कर रखा था। लेकिन, अब सरकार के फैसले के बाद वो घबरा गई हैं। मैंने उन्हें समझाया कि भारतीय रिज़र्व बैंक ने 2000 रुपये के नोटों को सर्कुलेशन से बाहर करने का एलान किया है। लेकिन, ये नोट वैध रहेंगे और 30 सितंबर 2023 तक इन्हें बैंकों में जमा कराया जा सकता है। चिंता की कोई बात नहीं। तो यह सुनकर उन्हें थोड़ी राहत मिली। जाहिर है इस निर्णय का असर उन लोगों पर अवश्य पड़ने वाला है जिन्होंने बहुतायत में 2000 के नोट जमा कर रखे हैं। बता दें कि 31 मार्च 2023 को 3.62 लाख करोड़ रुपये मूल्य के ही 2000 के नोट बाज़ार में चलन में थे। इन नोटों का सर्वाधिक सर्कुलेशन 31 मार्च 2018 को 6.73 लाख करोड़ रुपये था जो कुल नोटों का क़रीब 10 प्रतिशत है।

कई लोग इसे 2024 लोकसभा चुनाव से जोड़कर भी देख रहे हैं। वो मानते हैं कि कई पार्टियों ने चुनाव में खर्च करने के लिए 2000 के नोट जमा कर रखे होंगे इसलिए मोदी सरकार के दिशानिर्देश पर यह फैसला किया गया। अब सच क्या है यह तो विशेषज्ञ ही जाने पर बूढ़ी काकी के बहाने मैं आपका इशारा जिस बात की तरफ ले जाना चाह रहा हूँ वो ये है कि आज भी घरेलू महिलाओं की आदत में है बचत। वो अपने गुल्लक में, बक्से में, रामायण में, पोथी में सहेजकर रखती हैं कुछ पैसे जो संकट के समय परिवार के काम आ सके। मेरी माँ भी ऐसी ही थी।

अपना ख़्याल रखना!

विशेष संपादकीय

स्कूलों में गर्मी की छुट्टियाँ शुरू हो गई हैं। बच्चे घरों में बंद हैं। बाहर चिलचिलाती धूप है। प्रचंड गर्मी का मौसम है। ऐसे में सबसे ज़रूरी है- अपना ख्याल रखना। ऐसे मौसम में आधी आबादी की जिम्मेदारी और चुनौतियाँ भी बहुत बढ़ जाती हैं। आपको अपना ही नहीं बच्चों, बुजुर्गों समेत पूरे परिवार का ध्यान रखना होता है। यह काम आप बरसों से बखूबी करती भी आ रही हैं। महानगरों में फलों से लेकर सब्जी के ठेले लगाने वालों में महिलाओं की संख्या भी कम नहीं है। भीषण गर्मी में भी अपने घर के चूल्हे के लिए आय का साधन जुटाती इन मेहनतकश महिलायें समाज के हाशिये पर पड़ी वो गुमनाम नायिकाएँ हैं जिनकी व्यथा-कथा कोई नहीं कहता। एक शायर ने क्या खूब ही कहा है- 'सबसे मुश्किल तो वो कहानी है, जो किसी को नहीं सुनानी है।' ऐसी गुमनाम नायिकाओं से भी मैं यही कहना चाहूँगी कि- अपना ख्याल रखना। अपनी सेहत का, अपने आहार का, अपने खान-पान का, अपनी मुस्कान का। पानी पीते रहिए और खुद को डिहाएड्रेशन से बचाइए। क्योंकि आपके लिए ही वो कुम्हार चाची बना रही है मिट्टी के घड़े और सहेज रही है उम्मीदों के गुल्लक।

गाँवों से लेकर शहरों तक में जो महिलायें काम-काजी हैं खास कर जो मजदूरी करके अपना पेट पालती हैं, उन महिलाओं को भी ऐसे मौसम में संभल कर रहने की ज़रूरत है। बाहर निकलती महिलायें, स्कूटी चलाती लड़कियां सबको मैं अपने विशेष संपादकीय के जरिए यही संदेश दे रही हूँ कि अभी दो महीने अपना खास ध्यान रखें फिर उम्मीदों की बारिश लेकर आएगा सावन जो हमारे सभी दर्द को भुला देगा। ठीक ज़िंदगी की तरह जब संघर्षों से निकलकर आप पहुंचते हैं अपनी मंज़िल पर तो सारे दर्द और संताप भूल जाते हैं।

आधी आबादी 'संडे' को जिस तरह से आपका प्यार मिला है इससे हमारी टीम बेहद उत्साहित है।

आप अपनी राय और प्रतिक्रिया हमें भेजते रहिए। हमारा मेल आईडी है-
aadhiaabadisunday@gmail.com

– चारुल मल्लिक

इंटरव्यू

कांग्रेस को सपोर्ट करेंगे पर उसे भी दूसरे दलों का करना होगा समर्थन: ममता बनर्जी

कर्नाटक विधानसभा में कांग्रेस की जीत के बाद नीतीश कुमार समेत भाजपा विरोधी कई नेताओं की आँखों में एक चमक बढ़ गई है। 2024 लोक सभा चुनाव के लिए एक बार फिर से यूपीए का हिस्सा रहे पार्टियों में हलचल होने लगी है। इस बीच पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के सुर भी थोड़े बदले हुए नज़र आए और वो कांग्रेस को लेकर थोड़ा नरम नज़र आ रही हैं। इसी संबंध में ममता बनर्जी ने आधी आबादी टीम से बातचीत की है। प्रस्तुत हैं बातचीत के अंश:

सवाल: कर्नाटक चुनाव के नतीजों को आप किस तरह से देखती हैं?

ममता: बंगाल चुनाव के समय भी जनता ने भाजपा के प्रचार को देखा और उन्हें हराकर सबक सिखाया था। अब देश भी भाजपा का असली चेहरा पहचान चुकी है। कर्नाटक में नफ़रत फैलाने वालों की हार हुई है। अब भाजपा की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। यह 2024 लोकसभा चुनाव से पहले बड़ा संकेत है। मैं कांग्रेस पार्टी को इस जीत के लिए बधाई देती हूँ। मैं आगे आने वाले चुनावों में भी लोगों से अपील करती हूं कि वे बीजेपी को वोट न करें।'

सवाल: तो क्या माना जाए कि 2024 में आप और कांग्रेस साथ मिलकर चुनाव लड़ेंगे?

ममता: "कांग्रेस जहां मज़बूत है, वहां लड़े। हम उसका समर्थन करेंगे। इसमें कुछ ग़लत नहीं है। लेकिन उसे भी (कांग्रेस को) दूसरे दलों का समर्थन करना होगा।"

सवाल: यानी बंगाल में आपकी पार्टी मजबूत है तो यहाँ कांग्रेस को नहीं लड़ना चाहिए?

ममता: किसी ख़ास क्षेत्र में मजबूत दलों को एक साथ मिल कर लड़ना चाहिए। मैं कर्नाटक में कांग्रेस का समर्थन कर रही हूं। लेकिन उसे बंगाल में मेरे खिलाफ नहीं लड़ना चाहिए।" बीजेपी को हराने के लिए कांग्रेस को सीटों के बंटवारे में अपने-अपने इलाके में मजबूत क्षेत्रीय दलों को प्राथमिकता देनी होगी।

सवाल: सोनिया गांधी के आप काफी करीब हैं। उनसे इस बारे में आपकी कोई बातचीत?

ममता: मैंने उन्हें कर्नाटक जीत पर बधाई दी है। हम सबका लक्ष्य एक ही है कि 2024 में भाजपा को हराना और भाजपा की हार निश्चित है।

सवाल: सभी विपक्षी पार्टियों के लिए आपका क्या संदेश है?

ममता: मैं बीजेपी को 2024 के चुनाव में पूरे देश में हारते हुए देखना चाहती हूँ और वो भी यही चाहते हैं। हमें एकजुट होकर रहना होगा।

हलचल

सोनिया गांधी के दख़ल के बाद निकला कर्नाटक संकट का हल

कर्नाटक में जीत के बाद मुख्यमंत्री पद को लेकर कांग्रेस में मचे घमासान के हल के लिए शीर्ष नेतृत्व ने सोनिया गांधी से डीके शिवकुमार को उप मुख्यमंत्री और राज्य में पार्टी अध्यक्ष पद के लिए मनाने का अनुरोध किया ताकि सिद्धारमैया को मुख्यमंत्री बनाया जा सके। सूत्रों से मिल रही इस जानकारी के कुछ ही घंटों के अंदर कांग्रेस पार्टी की ओर से इसकी औपचारिक घोषणा भी हो गई। कांग्रेस पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने पहचान ज़ाहिर न करने की शर्त पर कहा, "सोनिया गांधी ने शिवकुमार से कहा कि हमारी पार्टी संकट में है, इसलिए आप समस्या नहीं बढ़ाइए। बाक़ी आप मुझ पर छोड़ दीजिए। आप मेरे बेटे के समान हैं। मैं आपका ख़्याल रखूंगी।" शिवकुमार से दिल्ली में जब पत्रकारों ने पूछा कि क्या उन्होंने उप मुख्यमंत्री का पद स्वीकार कर लिया है तो प्रसन्न मुद्रा में उन्होंने कहा, "अगर आलाकमान का निर्देश मिलता है, तो मैं स्वीकार कर लूंगा।" हालांकि सोनिया गांधी के दख़ल देने से पहले तक शिवकुमार मुख्यमंत्री पद के लिए अड़े हुए थे।

'सोन्निया, ममता भी देखें फिल्म 'द केरला स्टोरी': साध्वी प्राची

फायर ब्रांड नेता साध्वी प्राची अपने बयानों की वजह से लगातार चर्चा में रहती हैं। इस बार उन्होंने 'द केरला स्टोरी' का विरोध करने वालों पर निशाना साधा है। साध्वी प्राची ने फिल्म 'द केरला स्टोरी' पर कहा कि जब मैं लव जिहाद के बारे में बोलती थी तो लोग कहते थे साध्वी प्राची विवादित बयान देती हैं। आज ये सच हो गया है। 'द केरला स्टोरी' में जो दिखाया गया वो सच है। इस फिल्म मे तो एक परसेंट सच्चाई दिखाई गई है जबकि 32 हजार लड़कियां गायब हैं। अभी तो बंगाल फाइल्स भी बननी चाहिए। सोनिया गांधी और ममता बनर्जी का नाम लेकर साध्वी प्राची ने उन्हें भी यह फ़िल्म देखने की नसीहत दे डाली और यह भी कहा कि उनकी टिकट मैं बुक करा दूंगी बस वो ये बता दें कि वो कहां पर इसे देखना चाहती हैं।।

धरने पर बैठी पहलवानों ने बीजेपी महिला सांसदों को लिखी चिट्ठी

दिल्ली के जंतर मंतर पर धरने पर बैठी महिला पहलवानों ने अब मोदी सरकार में महिला और बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी समेत सभी महिला सांसदों को एक पत्र लिखा है। इस पत्र में महिलाओं ने न्याय में मदद करने की मांग की है। लिखा -हम स्पोर्ट्स और अपनी जिंदगी छोड़कर अपनी इज़्ज़त के लिए लड़ रहे हैं। हम पिछले 20 दिन से जंतर मंतर पर अपनी लड़ाई लड़ रहे हैं। हमने देखा कि उस आदमी की पावर ने प्रशासन की कमर तोड़ दी। साथ ही इसने हमारी सरकार को अंधा-बहरा बना दिया। आप महिला सांसद हैं, और वो भी सत्तारुढ़ पार्टी की। हमे आपसे बहुत उम्मीद है। हम आपसे मदद मांग रहे हैं। हम उम्मीद करते हैं आप थोड़ा वक्त निकालकर जंतर मंतर आएंगी और हमें आगे का रास्ता दिखाएंगी। इस चिट्ठी पर विनेश और साक्षी ने साइन किया है।

तलाक की अफ़वाहों के बीच सानिया मिर्जा के पति शोएब मलिक ने दिया जवाब

सानिया मिर्जा और शोएब मलिक के रिश्ते को लेकर पिछले साल से ही अफ़वाहों का बाजार गर्म हैं। कई रिपोर्ट्स के मुताबिक, सानिया और शोएब की शादीशुदा ज़िंदगी ठीक नहीं चल रही है और कपल एक-दूसरे से अलग रह रहा है।सानिया मिर्जा ने इन खबरों को लेकर अभी तक कोई बयान नहीं दिया है। हालांकि, शोएब मलिक ने तलाक की खबरों पर अपनी चुप्पी चुप्पी तोड़ते हुए कहा कि लोगों को समझना होगा कि हम दो अलग देशों से ताल्लुक रखते हैं और हमारी अपनी-अपनी कमिटमेंट्स हैं। शोएब मलिक ने जियो न्यूज पर एक इंटरव्यू के दौरान कहा- "जब वे (सानिया और इजहान) उमराह के लिए गए थे तो यहां पर मेरी प्रतिबद्धताएं थीं और जब मैंने ब्रेक लिया और इजहान के साथ वक्त बिताने के लिए दुबई गया तो सानिया की आईपीएल कमिटमेंट्स थीं। सभी को यह समझने की जरूरत है कि हम अलग-अलग देशों से हैं और हमारी अपनी प्रतिबद्धताएं हैं।

निकाय चुनाव में मिली करारी शिकस्त से बौखलाई मायावती

यूपी निकाय चुनाव में मिली करारी शिकस्त के बाद बसपा मुखिया मायावती ने राजधानी लखनऊ में सभी छोटे बड़े पदाधिकारियों की बैठक की। मायावती ने कड़े लहजे में कहा कि वोट हमारा राज तुम्हारा नहीं चलेगा। मायावती ने निकाय चुनाव की जिलेवार समीक्षा की और फीडबैक लिया। कहा कि चुनाव में भाजपा और समाजवादी पार्टी ने साम दाम दंड भेद जैसे घिनौने हथकंडे अपनाये। भाजपा ने सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग करते हुए दमन की कार्रवाई की। वोटर लिस्ट में गड़बड़ी की शिकायत रही। राज्य कमेटी और सभी 18 मंडलों में जिलों के पदाधिकारियों की बैठक लेते हुए मायावती ने कहा कि अब लोकसभा चुनाव की तैयारियों में मिशनरी लक्ष्य के साथ लगन से जुट जाना है। कहा कि अभियान गांव-गांव तेजी के साथ चलाया जाए।

पतनशील राज्यपालों की काली कथा

▪ दयानंद पांडेय

जानने वाले जानते हैं कि अगर विधानसभा अध्यक्ष सत्ता पक्ष का हो, क़ानून जानता हो, जूनून का धनी हो तो खुदा भी कोई सरकार नहीं गिरा सकता। लोकसभा के कभी अध्यक्ष रहे सोमनाथ चटर्जी को भूल जाइए। जिन्होंने संसदीय परंपरा के आगे पार्टी को भी पूरी सख्ती से नो कह दिया था और बेरहम पार्टी ने उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया। लेकिन यह एक अपवाद है। लोकसभा और और तमाम प्रदेशों की विधान सभा के अध्यक्ष संसदीय परंपरा और नियम क़ानून से नहीं अब हाईकमान के निर्देश पर चलते हैं। उत्तर प्रदेश में तब मुलायम सिंह यादव ने मुख्य मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। मायावती की सरकार आ गई। लेकिन धनीराम वर्मा परंपरा के मुताबिक इस्तीफा देने के बजाय अड़े रहे तो अड़े रहे। सब लोग समझा कर हार गए। धनीराम वर्मा लेकिन अंगद के पांव की तरह जमे रहे। फुल बेशर्मी से जमे रहे। मुलायम सिंह भी किनारे बैठ कर मजा लेते रहे। लंबा नाटक चला था तब। विधानसभा अध्यक्ष की ऐसी कहानियां और बेईमानियां कई हैं। लेकिन केशरीनाथ त्रिपाठी जब विधानसभा अध्यक्ष थे तब की उन की बेईमानियां और कारगुजारियां तो न भूतो, न भविष्यति!

ऐसे ही पतनशील राज्यपालों की जब कथा लिखी जाएगी तो पहला नाम हरियाणा के कांग्रेसी तत्कालीन दलित राज्यपाल जी डी तपासे का होगा। जिसे आयाराम, गयाराम के चक्कर में देवीलाल ने यह कहते हुए कि इंदिरा गांधी के चमचे तुम्हें पता नहीं है कि तुम ने लोकतंत्र की हत्या कर दी है, ज़ोरदार थप्पड़ मारा था। सुरक्षा कर्मी तपासे को बचा कर न ले गए होते तो देवीलाल लात-जूते भी मार सकते थे राज्यपाल तपासे को। लेकिन दूसरा कमीना नाम निश्चित रूप से उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल रोमेश भंडारी का है। बूटा सिंह, सिब्ते रजी, हंसराज भारद्वाज, रामलाल, जगन्नाथ पहाड़िया आदि तमाम और नाम भी हैं। खैर, तब लार्जेस्ट पार्टी भाजपा थी तब और कल्याण सिंह नाक रगड़ कर रह गए लेकिन रोमेश भंडारी ने उन्हें मुख्य मंत्री पद की शपथ के लिए नहीं बुलाया। तब जब कि कोई और दल सरकार बनाने के लिए आगे नहीं आया था। कहना न होगा कि यह सब समाजवादी पार्टी के रामगोपाल यादव के इशारे पर हो रहा था। उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन जारी रहा। लेकिन एक दिन अचानक भाजपा और बसपा में समझौता हो गया। समझौता हुआ कि बारी-बारी मायावती और कल्याण सिंह मुख्य मंत्री बनेंगे। पहले मायावती बनीं। फिर कल्याण सिंह का नंबर आया। लेकिन कुछ दिन बाद ही कल्याण सिंह से मायावती ने समर्थन वापस ले लिया। अब रोमेश भंडारी ने कल्याण से छत्तीस घंटे में बहुमत साबित करने को कहा। मायावती ने अपने सभी विधायकों को नज़रबंद कर लिया। कांग्रेस दो फाड़ हो चुकी थी। विधानसभा में बहुमत साबित करने के दिन बस में भर कर विधायकों को ले कर मायावती पहुंची। जब कि उन के पार्टी आफिस और विधानसभा की दूरी बमुश्किल दो सौ मीटर की थी। उत्तर प्रदेश विधान सभा परिसर में पहली बार किसी बस में भर कर विधायक पहुंचे थे। बस से उतार कर मायावती ने विधायकों की लाईन लगवा कर दो तीन बार गिनती करवाई। यह सब देख कर एक वरिष्ठ पुलिस अफसर बोले, ऐसी गिनती तो हम लोग पुलिस ट्रेनिंग सेंटर में भी नहीं करते। खैर मायावती आगे-आगे चलीं। बिलकुल किसी मानिटर की तरह। पीछे-पीछे लाईन से विधायक। नसीमुद्दीन सिद्दीकी, मुख़्तार अंसारी जैसे लोगों की निगरानी में। विधान सभा में पहुंच कर मायावती पहले ही से बैठे कांग्रेस के प्रमोद तिवारी के पास बैठ गईं और विह्वल हो कर बोलीं कि आप की कांग्रेस तो टूट गई पर हमारा एक भी विधायक नहीं टूटा। मायावती अभी यह बात प्रमोद तिवारी से कह ही रही थीं कि मायावती के विधायक जो उन के पीछे-पीछे आए थे, लगभग परेड करते हुए भाजपा के विधायकों की तरफ बढ़ गए। मैं विधान सभा की प्रेस गैलरी में बैठा यह सब देख रहा था। एक गया, दो गया, कई सारे। प्रमोद तिवारी मायावती से कुछ बोले नहीं, जवाब क्या देते खो गए सवालों में की स्थिति आ गई थी। उन्होंने सिर्फ इशारों से मायावती को इंगित किया। मायावती के पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई। चेहरा उड़ गया। सारी शेखी उतर गई थी। मायावती ने अपने विधायकों को नाम ले-ले कर पुकारा। पर उन की किसी ने नहीं सुनी। विधायक और तेज़ी से भाजपा पाले में बढ़ते चले गए। एक-एक कर चौदह विधायक मायावती के भाजपा की तरफ जा कर बैठ गए। प्रमोद तिवारी औचित्य का प्रश्न ले कर खड़े हो गए। पूरी विधानसभा में अफरा तफरी मच गई। आरोप-प्रत्यारोप के साथ ही हाथापाई शुरू हो गई। मायावती बहुत होशियार महिला हैं। उन्होंने इशारे से मुख़्तार अंसारी को अपने पास बुलाया। फिर इशारा किया कि मुझे कवर करो। और खुद बकैया-बकैया चल कर ताकि उन्हें कोई देख न सके फौरन विधानसभा से बाहर निकल गईं।

फिर तो उत्तर प्रदेश विधानसभा में जो बेमिसाल खून खराबा हुआ वह अब एक इतिहास है। सब को मालूम है। कितनों के सिर फूटे, कितनों के हाथ पैर। मेज पर लगी तमाम माईक तोड़ कर विधायकों ने मार पीट की। कुर्सियां चलीं। तब की मार पीट के एक से एक लाजवाब प्रसंग अभी भी मेरी आंखों और यादों में कैद हैं। विधानसभा अध्यक्ष केशरीनाथ त्रिपाठी ने खुद मेज के नीचे छुप कर कार्रवाई चलाई। उन के चारों तरफ मार्शल अलग खड़े थे। अंततः केशरीनाथ त्रिपाठी ने सदन में जब पुलिस के कमांडो बुलाए तब जा कर शांति बनी। लेकिन सारी मार पीट में भी केशरीनाथ त्रिपाठी ने एक क्षण के लिए भी बोलना बंद नहीं किया। बहुमत साबित होने की हर्षध्वनि के बाद केशरीनाथ त्रिपाठी ने बाकायदा इंगित किया कि माननीय राज्यपाल महोदय के निर्देशानुसार विधानसभा की कार्रवाई बिना एक क्षण भी रुके बहुमत साबित हो चूका है कृपया प्रेक्षक गण यह नोट कर लें। स्थितियां ऐसी थीं तब कि विधायकों की तोड़-फोड़ के बाद बवाल होना ही था, यह बात रोमेश भंडारी ठीक से जानते थे। इस लिए ही यह शर्त रखी थी कि बिना एक क्षण कार्रवाई रुके विश्वास मत प्राप्त करें कल्याण सिंह। लेकिन रोमेश भंडारी तब विधानसभा अध्यक्ष केशरीनाथ त्रिपाठी की क्षमता को नहीं जानते थे। नहीं जानते थे कि वह कितने घाघ वकील हैं। रोमेश भंडारी को तब कल्याण सिंह ने नहीं, केशरीनाथ त्रिपाठी ने पानी पिलाया था। और विधायकों के बीच जो भी तोड़-फोड़ हुई थी तब वह की थी राजनाथ सिंह ने। कल्याण सिंह तो बस दूल्हा बने बैठे रहे थे। अब यह भी अलग बात है कि उत्तर प्रदेश विधानसभा में यह सारी मार-पीट समाजवादी पार्टी के मुखिया मुलायम सिंह यादव द्वारा प्रायोजित थी। और उन का निशाना एक साथ दो था। एक तो कल्याण सिंह की सरकार गिर जाए लेकिन यह दूसरा निशाना था। पहला निशाना मायावती की तबीयत भर पिटाई की थी। लेकिन मायावती ऐन वक्त पर भाग गईं । सो सब योजना धूल-धुसरित हो गई।

हां, बाद के दिनों में केशरीनाथ त्रिपाठी ने जो किया वह संसदीय परंपरा पर एक गहरा दाग है। बसपा से टूटे लोगों ने जनतांत्रिक बसपा भले बना ली थी, सभी चौदह के चौदह मंत्री बन गए थे लेकिन दल बदल कानून के तहत वह लोग अयोग्य हो चुके थे। बसपा ने विधानसभा अध्यक्ष के पास यह शिकायत भी की। लेकिन विधानसभा का टर्म खत्म हो गया, केशरीनाथ त्रिपाठी ने यह सुनवाई नहीं खत्म की। तारीख पर तारीख देते रहे। केशरीनाथ त्रिपाठी की यह कार्रवाई एक गहरा धब्बा है, संसदीय परंपरा पर। लेकिन वह कहते हैं न कि जैसे को तैसा मिला। मायावती ने समझौते के तहत अपना मुख्यमंत्री का कार्यकाल तो पूरा किया भाजपा के समर्थन से पर भाजपा को पूरे समय समर्थन देने के बजाय समर्थन वापस ले लिया था। भाजपा ने तब उन्हें सबक सिखा दिया था। अब रियाज में पक्की हो चुकी भाजपा इन दिनों निरंतर कांग्रेस को उस के ही छल-कपट से सबक सिखा रही है तो लोग त्राहिमाम-त्राहिमाम करने लगे हैं। यह गुड बात नहीं है।

सर्राफा बाज़ार

22 कैरेट सोना	चांदी
₹56,588	₹72,900
प्रति 10 ग्राम	प्रति किलो

लिव इन में रह रही महिलाओं को है भरण पोषण का अधिकार!

“हमारे समाज में अविवाहित युवक-युवती के एक साथ रहने को सम्मान की नजर से नहीं देखा जाता। लेकिन इन दिनों तमाम बड़े शहरों में लिव इन रिलेशनशिप खूब पनप एवं फल फूल रही हैं। खास बात यह है कि समाज बेशक उन्हें तिरछी नजर से देखे, लेकिन कानून उनके साथ खड़ा है।”

▪ आधी आबादी डेस्क

लिव इन रिलेशनशिप क्या है? सामान्य शब्दों में कहें तो यह ऐसी व्यवस्था है, जिसमें दो लोग, जिनका विवाह नहीं हुआ है पति- पत्नी की तरह साथ रहते हैं। जब साथ रह रहे जोड़े के बीच सब कुछ सुखद चल रहा है तब तो कोई बात नहीं, लेकिन अगर दोनों के रिश्ते बोझिल हो चले हैं तो ऐसे में महिलाओं को कुछ बातें अवश्य जान लेनी चाहिए। हालांकि, भारत में इस संबंध में संसद में कोई कानून नहीं बनाया गया है, बावजूद इसके सुप्रीम कोर्ट की ओर से इस संबंध में दिए गए आदेश को ही कानून मान लिया गया है।

आज से करीब 43 साल पहले साल 1978 में सुप्रीम कोर्ट ने पहली बार लिव इन रिलेशनशिप को कानूनी तौर पर सही कहा। जस्टिस कृष्ण अय्यर ने कहा कि यदि पार्टनर लंबे समय तक पति पत्नी की तरह साथ रहे हैं तो पर्याप्त कारण है कि इसे विवाह माना जाए। सबसे बड़ी बात कि ऐसे दोनों लोग बालिग हों। अब तक समाज में विवाह एक धार्मिक कृत्य हुआ करता था, लिहाजा वह एक ऐतिहासिक फैसला था।

2006 में सुप्रीम कोर्ट ने एक अन्य मामले में फैसला देते हुए कहा था कि वयस्क होने के बाद व्यक्ति किसी के भी साथ रहने अथवा शादी करने के लिए स्वतंत्र है। कोर्ट ने साफ किया था कि कुछ लोगों की निगाह में अनैतिक माने जाने के बावजूद ऐसे रिश्ते में रहना कोई अपराध नहीं।

लिव इन रिलेशनशिप को कोर्ट संविधान के अनुच्छेद-21 के तहत दिए गए राइट टू लाइफ यानी जीने के अधिकार की श्रेणी में करार देता है। कोर्ट कई मामलों में यह कह चुकी है कि लिव इन रिलेशनशिप को पर्सनल आटोनामी यानी व्यक्तिगत स्वायत्तता के चश्मे से देखने की आवश्यकता है। सामाजिक नैतिकताओं की धारणाओं से नहीं।

लिव इन रिलेशनशिप में दो गैर शादीशुदा अथवा दो तलाकशुदा, अथवा जिनके पार्टनर गुजर गए हैं, ऐसे लोग साथ रह सकते हैं। लेकिन यदि जोड़े में से कोई एक शख्स भी पहले से शादीशुदा है तो उसे लिव इन यानी साथ रहने का अधिकार नहीं होगा।

लिव इन में रह रही महिला को भरण पोषण का अधिकार –

लिव इन में रह रही महिला को भरण पोषण की मांग करने का अधिकार है। इस संबंध में कोर्ट ने भी स्पष्ट किया है कि महिला को यह कहकर भरण पोषण के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता कि उन्होंने कानूनी विवाह नहीं किया है। लेकिन, यह तभी तक लागू होगा जब तक पुरुष साथी जीवित है।

लिव इन से उत्पन्न संतान को माता-पिता की संपत्ति में अधिकार

लिव इन में रहने के दौरान यदि कोई संतान उत्पन्न होती है तो उसे अपने माता-पिता की संपत्ति में पूरा अधिकार होगा।

लिव इन रिलेशनशिप में बच्चे पैदा किए जा सकते हैं, गोद नहीं लिए जा सकते

यदि कोई जोड़ा लिव इन रिलेशनशिप में है तो वह बच्चे अवश्य पैदा कर सकता है, लेकिन उसे किसी बच्चे को गोद लेने का अधिकार नहीं होगा।

कर सकते हैं सुरक्षा याचिका दायर

कानून में यह सुविधा दी गई है कि यदि लिव इन में रह रहे जोड़े को अपने किसी परिजन अथवा किसी अन्य से खतरा हो तो वह कोर्ट में सुरक्षा याचिका दायर कर अपने लिए सुरक्षा मुहैया कराने की गुहार लगा सकता है।

ओटीटी पर है आधी आबादी का जलवा!

▪ निमिषा दीक्षित

> अपने शुरुआती दौर में ओटीटी ने महिलाओं की एक ऐसी छवि गढ़ी जिसे पचाना आसान नहीं था। महिला जो गालियां देती हैं, जो वासना से भरी हुई है, जो व्यसनों में जुटी है ऐसे किरदारों की भरमार थी। एकदम से लगा कि यह स्त्री का कौन सा रुप है जिसे ओटीटी भुनाना चाहती है?

27 लड़कियों की दर्दनाक मौत और उन्हें न्याय दिलाने वाली एक महिला और यही कहानी है हाल ही में रिलीज़ वेब सीरीज 'दहाड़' की। रीमा कागती और ज़ोया अख़्तर की इस सीरीज़ का निर्देशन भी कागती ने ही रुचिका ओबेरॉय के साथ मिलकर किया है। क्राइम-ड्रामा सीरीज 'दहाड़' के साथ सोनाक्षी सिन्हा ने अपना डिजिटल डेब्यू किया है। इस सीरीज नें सोनाक्षी एक दिलेर पुलिस अधिकारी की भूमिका में हैं, जो उन 27 लड़कियों की मौत का सच जानने और अपराधी को पकड़ने के लिए अपने जान की बाजी लगा देती

हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि 'दहाड़' ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर आधी आबादी की दहाड़ ही है। जहाँ निर्माता-निर्देशक से लेकर अभिनेत्री ही नहीं विषय वस्तु भी जहाँ 'आधी आबादी' ही हैं। हाल के वर्षों में ओटीटी पर अभिनेत्रियों का यानि की आधी आबादी का जलवा रहा है।

अपने शुरुआती दौर में ओटीटी ने महिलाओं की एक ऐसी छवि गढ़ी जिसे पचाना आसान नहीं था। महिला जो गालियां देती हैं, जो वासना से भरी हुई है, जो व्यसनों में जुटी है ऐसे किरदारों की भरमार थी। एकदम से लगा कि यह स्त्री का कौन सा रूप है जिसे ओटीटी भुनाना चाहती है? लेकिन, धीरे-धीरे चीजें बेहतर हुई हैं और आज स्त्रियों के सशक्त किरदार वेब सीरीज के जरिए हम देख रहे हैं।

यह हम सबने महसूस किया है कि कोरोना महामारी के संक्रमण के दौरान ओटीटी प्लेटफार्म का चलन बढ़ गया है। हालांकि ज्यादातर शो पुरुषों के ऊपर केंद्रित रही हैं, वहीं कुछ ऐसी वेब सीरीज भी आईं जिसने स्त्री के मन को और उनकी पीड़ा को जतन से दिखाया साथ ही उनकी सशक्त छवि भी प्रस्तुत की।

इसी कड़ी में नेट फ्लिक्स पर आई एक वेब सीरीज 'लैला' भी चर्चा में रही। 'लैला' कहानी है एक हिंदू मां की। जिसके पति को मारा गया क्योंकि वो मुसलमान था और लोगों ने स्वीमिंग पूल का पानी को मौत का कारण बताया जो की झूठ था। जिसके बाद मां-बेटी को अलग कर दिया गया। यह पूरी सीरीज़ उसी बेटी की तलाश के ऊपर बनी हुई है। इस सीरीज में मुख्य किरदार के रूप में है हुमा कुरैशी जो 'लैला' की मां- शालिनी रिज़वान चौधरी है। पूरी सीरीज़ में आपको हुमा ही दिखेंगी। उनके अलावा जो किरदार सबसे ज्यादा दिखते हैं, उनमें से एक हैं सिद्धार्थ जो 'विद्रोही' बने हैं। ऐसा किरदार जो दुश्मनों के बीच रहकर चुपके से अपना काम करता है। सीरीज में दिखाया गया है कि, सोसायटी में अपने 'जात-धर्म' के अलावा किसी को चाहना, उससे शादी करना, उससे सेक्स करना पाप है। ऐसा करने वाली औरतें 'दूषित' हैं, उनके लिए 'शुद्धि केंद्र' बने हैं। जहां उन्हें जबरन उठाकर लाया जाता है। यहां पर शुद्धि के नाम पर कोई भी आता-जाता है और 'आर्यावर्त' का पिट्ठू उन्हें 'रंडी' पुकार सकता है। पेट से हुई तो जबरन उनका बच्चा गिरा दिया जाता है और फिर खूब जतन करके उनका माइंडवॉश किया जाता है।

एक और वेब सीरीज 'हंड्रेड' की बात करें तो इस वेब सीरीज के दो मुख्य किरदार हैं- एक पुलिस ऑफिसर है सौम्या (लारा दत्ता) जिसे डिपार्टमेंट ने शो-पीस बना कर रखा है। दूसरी है नेत्रा (रिंकू राजगुरु) जो एक मध्यमवर्गीय परिवार से है। सौम्या चाहती है कि बदमाशों का पीछा करे, उनसे मुकाबला करे, केस सॉल्व करे, लेकिन उसका बॉस हमेशा उसे इस काम से दूर रखता है। वहीं दूसरी ओर नेत्रा अपने पिता, भाई और नाना के बीच इकलौती कमाने वाली है। साथ ही नेत्रा की कहानी में तब मोड़ आता है जब उसे पता चलता है कि ब्रेन ट्यूमर है और अब उसके पास मात्र सौ दिन हैं। जिसके बाद नेत्रा एक बकेट लिस्ट तैयार करती है। इस लिस्ट में सेक्स, स्विट्ज़रलैंड यात्रा, जिंदगी में रोमांच के अलावा भी बहुत कुछ लिखा रहता है। दूसरी ओर जब सौम्या को पता चलता है कि नेत्रा के पास समय कम है तो वह उसे अपने लिए इस्तेमाल करती है। सौम्या नेत्रा को अपराधियों तक पहुंचने के लिए उसे खतरे में डालती है। सीरीज में दो पुरुषों, एक महिला- एक पुरुष की टीम देखने को मिलती है, लेकिन दो महिलाओं की टीम कम देखने को मिलती है। इस वेबसीरिज़ का निर्देशन रूचि नारायन, आशुतोष शाह और ताहिर शब्बीर ने किया है। आप इस वेब सीरीज को हॉटस्टार पर देख सकते है।

वहीं "एक थी बेगम" जुर्म की कहानी सुनाती क्राइम सीरीज है। यह जुर्म के दुनिया के बादशाहों के बीच में एक बेगम की कहानी है। जो एक-एक करके सारे बादशाहों को मात देती जाती है और सारे बादशाह एक-दूसरे से पूछते है, कौन है यह बेगम? इसका निर्देशन सचिन दारेकर ने किया है।

महिलाओं पर केंद्रित एक और सीरीज जो चर्चा में रही वो है- 'दिल्ली क्राइम'। इस वेब सीरीज में शेफाली शाह और रस्सिका दुग्गल ने दमदार किरदार निभाया है। इस सीरीज को दिल्ली में हुए रेप क्राइम पर बनाया गया है। 'महारानी' की बात करें तो यह बिहार की पॉलिटिक्स को दर्शाती एक कमाल की सीरीज है, जिसमें हुमा कुरैशी ने लीड रोल निभाया है। 'महारानी' भी परदे पर स्त्री की एक सशक्त छवि दिखाने में कामयाब रही है।

वहीं 'द मैरिड वुमेन' दो महिलाओं की शादीशुदा ज़िंदगी को दिखाती है। इस सीरीज में दो महिलाएं शादी के बाद अपने खुद के अस्तित्व की तलाश करती हुई दिखती हैं। सीरीज को ऑल्ट बालाजी और जी 5 पर देखा जा सकता है। इसके अलावा ' द फ़ेम गेम', 'आर्या' जैसी कई सीरीज आईं जिनमें एक सशक्त महिला की गूंज हम सुन सकते हैं।

राजनीति से लेकर ड्रग्स और संबंधों से लेकर परिवारों के इर्द-गिर्द बुनी गई कहानियों के बीच ये महिला किरदार अपनी दमदार मौजूदगी दर्ज़ कराने में कामयाब हुई हैं और आने वाले समय में ऐसी कई कहानियाँ हैं जो महिलाओं को केंद्र में रख कर रची जा रही हैं। निः संदेह ओटीटी पर महिलाओं का जलवा है जो आगे भी कायम रहेगा।

▪ सीमा संगसार

गांधी की आध्यात्मिक पत्नी का दर्ज़ा पाकर भी सत्य के प्रयोग से नदारद एक देवी

'गाँधी और सरलादेवी चौधरानी: बारह अध्याय' एक स्त्री के जीवन का वह अध्याय है, जो उसके उत्स का कारण है तो उसके पतन की भी एक वजह है। प्रेम इंसान को अंधा करता है ये सुनती आई हूँ और दुर्बल भी होता है इंसान यह भी महसूसा है मैंने लेकिन एक हद तक हठी और सनकी भी हो सकता है वह तो इस अध्याय को पढ़ कर खत्म करने के बाद यह धारणा और भी पुख्ता हो गई। प्रेम अगर कोई साधारण इंसान करे तो समझ में आता है लेकिन महात्मा समझने वाले गांधी अगर करे तो बात हजम नहीं होती। आखिर क्यों उनके सारे आदर्श एक स्त्री और उसके प्रेम के आगे खोखले साबित हो जाते हैं? अगर इस बात की सूक्ष्मता से पड़ताल की जाए तो यही बात प्रमुखता से उभर कर आती है कि पितृसत्तात्मक समाज की जड़ें इतनी मजबूत है कि हमारे देश का महात्मा गांधी भी उससे अछूता नहीं है।

हमारे समय की एक महत्वपूर्ण और सशक्त लेखिका अलका सरावगी ने इस पुस्तक के जरिए जो आत्ममंथन किया है वह एक गहरे स्त्री विमर्श को साकार करती हुई नजर आती है। भले ही उनकी लेखनी किसी खास विमर्शों या खांचे में कभी नहीं ढली है लेकिन उनके स्त्री पात्रों में जो करुण वेदना होती है और एक सन्नाटा पसरा होता है वह कहीं न कहीं स्त्रियों के स्वतंत्र शुचिता व अस्मिता पर प्रश्न खड़े करती है। सरला देवी चौधरानी एक ऐसा ही जीवंत पात्र है जिनकी कहानी पढ़ने के बाद मेरे मन में कई सारे सवाल उमड़ने लगे और स्वभावगत मेरा स्त्री मन विद्रोह कर बैठा। अलका सरावगी अपनी लेखनी के जरिए यही तो करती हैं वह पात्र रचती हैं कहानी सुनाती हैं और पाठकों के दिलों में बवंडर छोड़ जाती हैं।

सबसे पहले तो सरला देवी चौधरानी के नामांकरण पर ही मेरा स्त्री मन आहत हुआ कि आखिर किसकी चौधरानी और कैसी चौधरानी? अपने उम्र से दुगूने और तीसरी बार ब्याहे गये पति रामभज चौधरी की पत्नी होने के नाते वह चौधरानी है? तो मैं ऐसी सरला देवी को सिरे से खारिज करती हूँ जो व्यक्तिगत रुप से खुद एक शेरनी हैं। उनकी व्यक्तिगत आभा किसी परिचय की मुहताज नहीं है चाहे वह रविन्द्रनाथ टैगोर की भांजी हो या फिर कलकत्ते की राजघराने की बेटी के तौर पर हो। सरला देवी का परिचय इन सभी उपादानों से कहीं ऊपर है। सरला देवी की विलक्षण प्रतिभा जिसके कायल वंकिमचंद्र चटर्जी भी थे। महात्मा गांधी ने उन्हें आध्यात्मिक पत्नी का दर्जा दिया और उनसे अथाह प्रेम किया। यह तो इतिहास की एक असाधारण घटना थी लेकिन गांधी के पुरुषवादी सोच ने कहीं न कहीं इस प्रेम का वही हश्र किया जो अमूमन एक साधारण पुरुष करते हैं। एक स्त्री को हमेशा कमतर देखना और उसके दायरे को संकुचित करना कहीं न कहीं उसकी प्रतिभा और उसमें छिपी असीम संभावनाओं को नष्ट करती है। प्रेम में प्रेमी या प्रेमिका को क्यों हमेशा उसके फ्रेम में ही फिट होना है ? गांधी गांधी थे और सरला सरला फिर गांधी को क्यों उससे गांधी बनने पर एक सनक सवार था। बचपन से ही जो स्त्री देश सेवा के लिए न्योछावर होना चाहती थीं उसे क्यों गांधी बन कर ही अपनी एक अलग पहचान बनानी है?

जबकि वह खुद सक्षम है नारी मुक्ति मोर्चा और

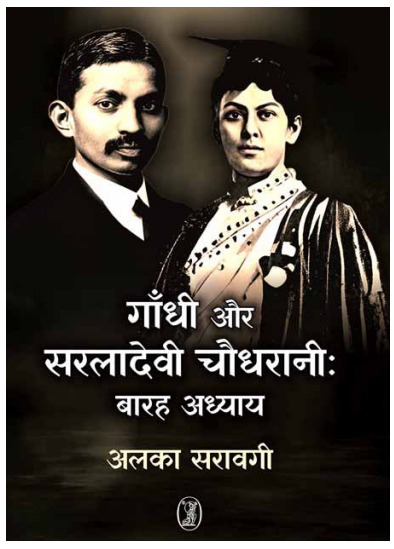

स्वदेशी पर स्त्रियों को जागरूक करने और देश के हित में अपने आपको कुर्बान करने में। आखिर सरला देवी अपने जीवन को गांधी के आगे ही कुर्बान करके क्यों महान हो सकती है जबकि वह खुद देश के लिए पूरी तरह से कुर्बान है। अपने पति, सौतेले बच्चों समेत अपने मासूम बच्चे दीपक और सासू माँ सबको त्याग कर वह देश सेवा के लिए अपने आपको होम न करके क्यों वह गांधी के पास जाकर ही उसकी सेवा सत्यापित होगी? क्या गांधी ने सरला देवी का मानसिक दोहन नहीं किया? उनका अपने निजी व देश सेवा हित के लिए उनका उपयोग नहीं किया? क्यों सरला देवी को उनसे असहयोग आंदोलन जैसे मुद्दों पर असहमति का अधिकार नहीं है? क्यों सरला को गांधी से प्रश्न पूछने का अधिकार नहीं है?

और गांधी को यह हक किसने दिया कि सरे आम सभाओं में कस्तूरबा का मजाक उड़ाए और सरला देवी का खादी पहनने पर महिमामंडन करें? ऐसे न जाने कितने सारे प्रश्न मेरे जेहन में चकरघिन्नी खा कर बेदम हो रहे हैं।

मुझे लगता है कि इन सारे सवालों के जबाब कहीं न कहीं इसी बारह अध्याय में छुपे पड़े हैं। जिसे जरूरत है तो बस टटोलने की हाय मेरा समाज तू न बदला! अलका सरावगी ने जिस जतन से गांधी और सरला देवी के मध्य पत्राचार को माध्यम बनाकर इस उपन्यास को लिखा है वह अद्भुत है। बहुत सारी ऐसी बातें हैं जो इतिहास के पन्नों में दर्ज नहीं है उनमें स्वयं सरला देवी चौधरानी भी है जो गांधी की आध्यात्मिक पत्नी का दर्ज़ा पाते हुए भी सत्य के प्रयोग से नदारद है। जबकि उन्होंने अपने ब्रहमचर्य के पालन में भी सरला देवी को एक चूक के रुप में माना जिससे वे बाल बाल बच गये। एक ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज जो एक स्त्री के जीवन को गुनती है जरूर पढ़ा जाना चाहिए साथ ही गांधी की नीतियों और उनके प्रयोगों को जानने की भी एक अदद पुस्तक मानी जा सकती है। यह कभी गुदगुदाती है, रुलाती है तो बहुत सारे प्रश्नों को अपने पीछे छोड़ जाती है।

पुस्तक - गांधी और सरला देवी चौधरानी: बारह अध्याय
लेखक - अलका सरावगी
प्रकाशन - वाणी
कीमत -299/

प्रबंध संपादक: दिनेश के सिंह ❁ संपादक: हीरेन्द्र झा-निमिषा दीक्षित ❁ सलाहकार संपादक: चारुल मल्लिक, राजेश शर्मा, गीता सिंह ❁ डिज़ाइनर: मो. हसमतुल्लाह अंसारी

RNI-DELHIN/2013/51353